SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

हिमालयी राज्य उत्तराखण्ड के पौड़ी गढ़वाल जनपद में ग्रामीण जनसंख्या ह्रास का अध्ययन

कैलाश चन्द्र, पी.सी. चन्याल, डी. एस. परिहार, पुष्कर सिंह, भूगोल विभाग
डी. एस. बी. परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors

कैलाश चन्द्र, पी. सी. चन्याल,
डी. एस. परिहार, पुष्कर सिंह

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/04/2023
Revised on : -----
Accepted on : 27/04/2023
Plagiarism : 00% on 20/04/2023

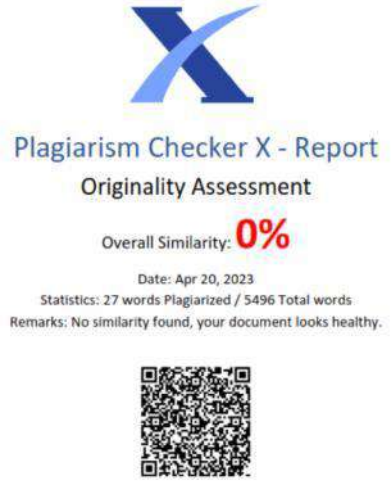

शोध सार

जनसंख्या ह्रास जनसंख्या भूगोल के अध्ययन का एक प्रमुख विषय है, हालांकि अन्य सामाजिक विज्ञानों में भी जनसंख्या ह्रास के विभिन्न पक्षों का अध्ययन विषय के मूल सिद्धान्तों के आधार पर किया जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य उत्तराखण्ड राज्य के पौड़ी गढ़वाल जनपद के अन्तर्गत ग्रामीण जनसंख्या के ह्रास के कारणों एवं परिणामों का अध्ययन करना है। पौड़ी गढ़वाल जनपद से रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा जैसी मूलभूत सुविधाओं की अल्प उपलब्धता के कारण पर्वतीय ग्रामीण क्षेत्रों से मैदानी नगरीय क्षेत्रों एवं औद्योगिक केन्द्रों की ओर ग्रामीण कार्यशील जनसंख्या का बाह्य प्रवास होता रहा है, लेकिन वर्तमान में बदलते सामाजिक–आर्थिक परिदृश्य, संचार, परिवहन एवं औद्योगिक विकास तथा ग्रामीण जीवन निर्वाह कृषि के अवनयन आदि कारणों से ग्रामीण से नगरीय प्रवास के प्रतिरूप में परिवर्तन परिलक्षित हुआ है। वर्ष 1990 के दशक तक पौड़ी गढ़वाल जनपद के पर्वतीय क्षेत्रों से होने वाला प्रवास 'व्यक्तिगत अस्थायी प्रवास' होता था अर्थात् सभी परिवारों से लगभग एक या दो व्यक्ति नगरों में विभिन्न उद्यमों में कार्यशील रहते थे तथा वे अपने मूल स्थानों को अर्जित धन को मनीआर्डर से भेजते थे इसीलिए इस व्यवस्था को मनीआर्डर अर्थव्यवस्था भी कहा गया। वर्तमान समय में प्रवास 'व्यक्तिगत अस्थायी प्रवास' की तुलना में 'स्थायी पारिवारिक प्रवास' बढ़ा है, जिसमें प्रवासी अपने सपरिवार ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर स्थायी रूप में प्रवास कर रहे हैं। प्रवास के इस बदलते प्रतिरूप के परिणाम स्वरूप अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या ह्रास का परिदृश्य उभर कर सामने आया है। वर्ष 2001–2011 के जनगणना कालावधि में जनपद पौड़ी गढ़वाल में नकारात्मक जनसंख्या वृद्धि अंकित की गई। सामान्यतः जनसंख्या ह्रास को

जनसंख्या में नकारात्मक वृद्धि के रूप में ही समझा जाता है, लेकिन जनसंख्या ह्रास केवल नकारात्मक वृद्धि नहीं बल्कि जनांकिकी संघटन एवं जनसंख्या वितरण के साथ–साथ सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक गतिविधियों को भी प्रभावित करता है।

मुख्य शब्द

जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या ह्रास, ग्रामीण से नगरीय प्रवास, व्यक्तिगत व पारिवारिक स्थायी एवं अस्थायी प्रवास.

प्रस्तावना

जनसंख्या ह्रास सभी सामाजिक विज्ञानों में अध्ययन का एक महत्वपूर्ण विषय है। अलग–अलग विषय जनसंख्या ह्रास के विभिन्न पक्षों का अध्ययन अपने विषय के मूल सिद्धान्तों का आधार मानकर करते हैं लेकिन भूगोल में जनसंख्या ह्रास का अध्ययन कौन, कहाँ, कैसे, क्यों जैसे– प्रश्नों के साथ प्रस्तुत किया जाता है। जनसंख्या भूगोल में जनसंख्या ह्रास एवं प्रवास दोनों अन्तर सम्बन्धी पहलू हैं। जनसंख्या ह्रास सम्बन्धी प्रारम्भिक अध्ययन (Long Staff 1893) के शोध में मिलता है, उन्होंने 1851 से 1881 की जनगणना आंकड़ों के आधार पर ग्रामीण जनसंख्या ह्रास का अध्ययन इग्लैण्ड, स्कॉटलैण्ड, वेल्स तथा आयरलैण्ड में किया। उन्होंने अपने अध्ययन में देखा कि जनसंख्या ह्रास की प्रवृत्ति इग्लैण्ड की शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक तीव्र है। इसी आधार पर उन्होंने इग्लैण्ड के ग्रामीण क्षेत्र में जनसंख्या ह्रास के पीछे कई कारण ढूंढे जिसमें मुख्य व्यापार प्रणाली, कृषि उत्पादों का कम मूल्य विशेषकर अनाज के उत्पादों अत्यधिक जिम्मेदार हैं, इसके अतिरिक्त विनिर्माण क्षेत्र में अधिक श्रमिकों की अवश्यकता ने ग्रामीण क्षेत्र से शहर की ओर जनसंख्या को आकर्षित किया है। (Long Staff) के शोध पत्रों में आस्ट्रेलिया, स्पेन, हंगरी, फ्रांस, जर्मनी तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में भी जनसंख्या ह्रास को लेकर किये गये अध्ययनों में जन्मदर में कमी और मृत्युदर को आधार बनाते हुए (Weyl, 1912) ने देखा कि फ्रांस में जनसख्या ह्रास का कारण जन्मदर में कमी है। (Goto जापान 1994) ने विश्व के विकसित देशों के सीमान्त क्षेत्रों में जनसंख्या ह्रास के अध्ययन में अनुभव किया कि जापान के गाँवों में जनसंख्या ह्रास अलग–अलग चरणों में हुआ, गाँवों से शहरों की ओर प्रवास गाँवों के लुप्त (Jisappearance) हो जाने का कारण रहा है। उपरोक्त अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि जनसंख्या ह्रास के वितरण एवं जनसंख्या परिवर्तन को प्रभवित करने वाला प्रमुख कारण है। जनसंख्या ह्रास के कारण जनसंख्या ह्रास के उद्गम क्षेत्र तथा प्राव्य क्षेत्र दोनों में अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं जनसांख्यिकी परिवर्तन परिलक्षित होते हैं। जनसंख्या ह्रास से किसी क्षेत्र पर पड़ने वाले सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव समय के साथ–साथ परिवर्तनशील होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन जनपद पौड़ी गढ़वाल में ग्रामीण जनसंख्या ह्रास' के अन्तर्गत 'जनपद पौड़ी गढ़वाल के विकासखण्डों में वर्ष 2001 व 2011 के मध्य हुए जनसंख्या ह्रास का अध्ययन किया है।

विधि तन्त्र

विधि तन्त्र सभी प्रकार के शोध कार्यो का एक महत्वपूर्ण भाग होता है। विधि तन्त्र में शोध की कार्यविधियों, तकनीकों एवं विश्लेषण में प्रयुक्त आधारों आदि का विवरण प्रस्तुत किया जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र हिमालयी राज्य उत्तराखण्ड के पौड़ी गढ़वाल जनपद में ग्रामीण जनसंख्या ह्रास का अध्ययन में कार्य के विधि तन्त्र को निम्नवत् प्रस्तुत किया गया है:

आंकड़ों का संकलनः प्रस्तुत अध्ययन में द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया हैं। द्वितीयक आंकड़ों का संकलन जनगणना पुस्तिकाओं से किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषणः आंकड़ों के विश्लेषण एवं द्वितीयक आंकड़ों को क्रमबद्ध करने हेतु निम्न सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है:

1. **वर्ग अन्तरालः** विभिन्न चरों को वर्गीकृत करने के लिए वर्ग अन्तराल निर्धारित करने हेतु निम्न विधियों का प्रयोग किया गया है। अधिकतम सीमा, निम्न सीमा एवं युक्ति युक्त वर्ग अन्तरालों की संख्या का ध्यान में रखकर आंकड़ों का विभाजन किया गया है।

2. **गणितीय समान्तर माध्यः** प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न गांवों की जनसंख्या वृद्धि अथवा ह्रास का औसत ज्ञात करने के लिए गणितीय समान्तर माध्य का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

जनपद पौड़ी गढ़वाल उत्तराखण्ड राज्य के 13 जनपदों में से एक है। यह जनपद गढ़वाल जिला जिसे आगे पौड़ी जिले के नाम से सम्बोधित किया गया है। पूर्व में यह जिला 52 राज्यों के 52 गढ़ों को मिलाकर बनाया गया था। सन् 1790–91 में गोरखों ने कोटद्वार में आक्रमण किया और प्रतिवर्ष 25000 रूपये कर के रूप में लेकर नेपाल पहुँचाया जाता था। इस क्षेत्र पर सन् 1803 से मई 1815 तक गोरखों ने शासन किया। इसके बाद से स्वतंत्रता प्राप्ति तक यह अंग्रेजी हुकुमत का हिस्सा रहा। 24 फरवरी 1960 में पौड़ी से चमोली के हिस्से को अलग कर जिले का नाम दिया गया। 17 सितम्बर 1997 में खिर्सू विकासखण्ड से 72 गाँवों को अलग कर रूद्रप्रयाग जिले में शामिल किया गया।

जनपद पौड़ी गढ़वाल का अक्षांशीय व देशान्तरिय विस्तार 29045′ से 30015′ अक्षांश तथा 78024′ पूर्व से 79023′ पूर्वी देशान्तर (मानचित्र–1) के मध्य स्थित है। जनपद पौड़ी गढ़वाल के उत्तर में चमोली, रूद्रप्रयाग और टिहरी गढ़वाल के साथ दक्षिण में बिजनौर एवं उधमसिंह नगर के साथ दक्षिण में सीमा साझा करता है। इसके पूर्व में अल्मोड़ा व नैनीताल तथा पश्चिम में हरिद्वार एवं देहरादून जिले अस्थित हैं। पौड़ी गढ़वाल जनपद को प्रशासनिक दृश्य से 9 तहसीलों व 15 विकासखण्डों में विभाजित किया गया है। पौड़ी गढ़वाल जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 5229 वर्ग किलोमीटर है।जिसमें 5156.84 वर्ग किलोमीटर ग्रामीण क्षेत्र तथा 72.16 वर्ग किलोमीटर नगरीय क्षेत्र है।

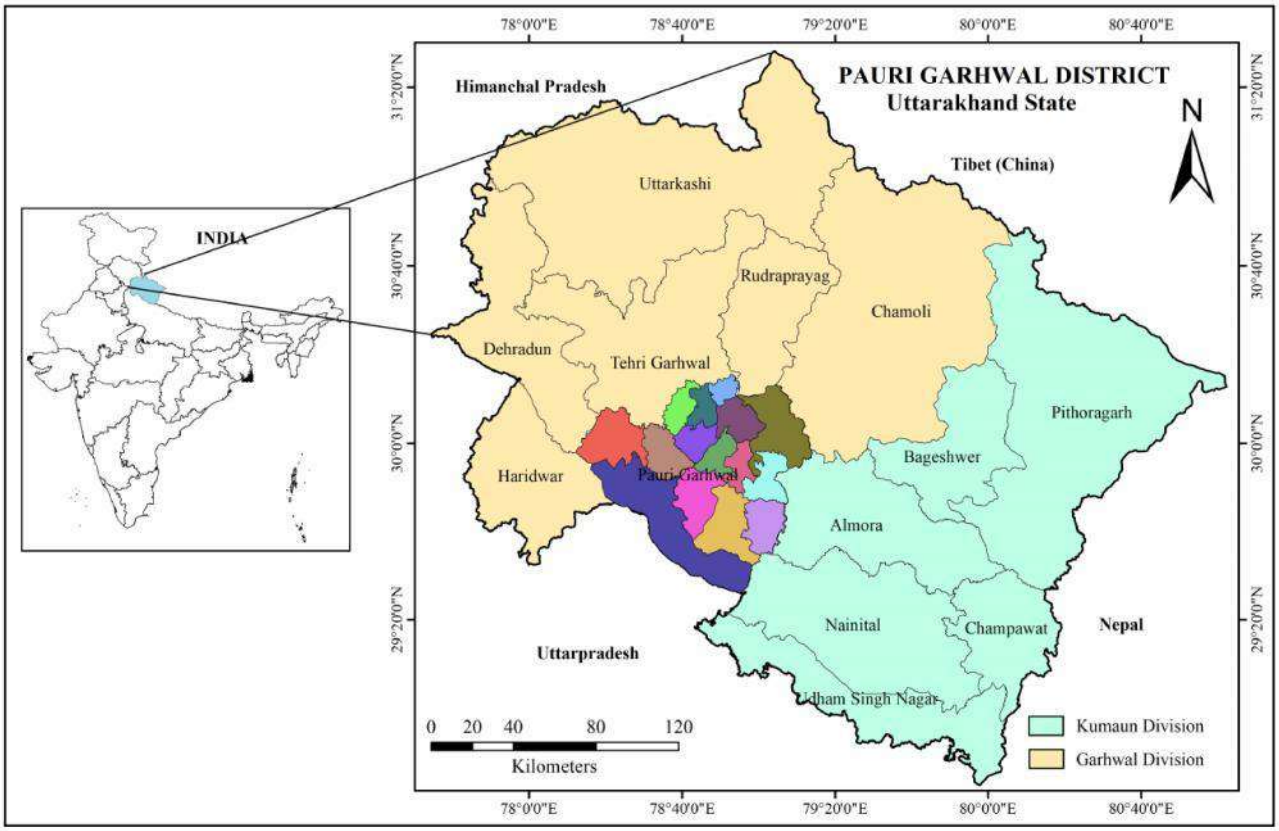

मानचित्र–1: जनपद पौड़ी गढ़वाल की भौगोलिक स्थिति विस्तार गढ़वाल मण्डल, उत्तराखण्ड, भारत के संदर्भ में।

जनपद पौड़ी गढ़वाल में ग्रामीण जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व

जनसंख्या वितरण एवं जनसंख्या घनत्व दो परस्पर सम्बन्धित लेकिन भिन्न संकल्पनाएं हैं। जनसंख्या वितरण एवं घनत्व की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से पता चलता है कि मानव सभ्यता के विकास एवं उसमें आयी जटिलताओं के साथ–साथ न तो जनसंख्या वितरण सरल प्रारूप में मिलता है और न ही इसके वितरण स्पष्टीकरणों का खोज पाना इतना सरल कार्य रह गया है। जनसंख्या का भिन्न–भिन्न स्थानों में पाये जाने वाला विभाजन जो संख्यात्मक होता है जनसंख्या वितरण कहलाता है। जनपद पौड़ी गढ़वाल 15 विकासखण्डों से मिलकर बनी एक इकाई है इसलिए जनसंख्या के वितरण व घनत्व को विकासखण्डवार प्रस्तुत करना समाचीन होगा। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार विभिन्न विकासखण्डों में ग्रामीण जनसंख्या का वितरण व घनत्व निम्नवत है।

तालिका 1: जनपद पौड़ी गढ़वाल में विकासखण्डवार ग्रामीण जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व (2011)

क्र0 सं0	विकासखण्ड	क्षेत्रफल	जनगणना वर्ष 2011			जनसंख्या घनत्व
			व्यक्ति (प्रतिशत्)	पुरुष (प्रतिशत्)	महिला (प्रतिशत्)	
1.	बीरोंखाल	260.48	40920 (7.12)	18099 (44.23)	2282 1 (55.77)	157
2.	थलीसैण	547.41	59915 (10.43)	27496 (45.89)	32419 (54.11)	109
3.	नैनीडाडा	360.24	32937 (5.73)	14890 (45.21)	18057 (54.82)	91
4.	दुग्ड्डा	821.12	114832 (19.99)	56298 (49.03)	58534 (50.97)	140
5.	रिखड़ीखाल	447.48	29830 (5.19)	13647 (45.75)	16183 (54.25)	67
6.	जयहरीखाल	375.55	26700 (4.65)	12461 (46-67)	14239 (53.33)	71
7.	यमकेश्वर	434.21	38896 (6.77)	18651 (47.95)	20245 (52.05)	90
8.	खिर्सू	211.34	26743 (4.65)	13104 (49.00)	13639 (51.00)	127
9.	द्वारीखाल	314.43	38106 (6.63)	17720 (46.50)	20386 (53.50)	121
10.	पौड़ी	189.15	28702 (5.00)	13479 (46.96)	15223 (53.04)	152
11.	कोट	216.19	23754 (4.13)	11242 (47.33)	12512(52.67)	110
12.	एकेश्वर	220.81	28065 (4.88)	12830 (45.72)	15235 (54.28)	127
13.	कल्जीखाल	228.08	29287 (5.10)	13253 (45.28)	16034 (54.75)	128
14.	पोखड़ा	210.29	21213 (3.69)	9386 (44.25)	11827 (55.75)	101
15.	पाबों	320.06	34650 (6.03)	15467(44.64)	19183 (55.36)	108
कुल		5156.84	574550	268023(46.65)	306537(53.35)	111

(स्रोतः जिला जनगणना पुस्तिका–2011)

तालिका–1 के अनुसार सबसे सर्वाधिक ग्रामीण जनसख्या दुग्ड्डा विकासखण्ड में है जो पौड़ी गढ़वाल जनपद की कुल जनसंख्या का 19.99 प्रतिशत है जिसमें 49.03 प्रतिशत पुरुष व 50.97 प्रतिशत महिलाऐं हैं, वहीं सबसे कम पोखड़ा विकासखण्ड में है जो पौड़ी जनपद की कुल जनसंख्या का 3.69 प्रतिशत हैं जिसमें 44.25 प्रतिशत पुरुष व 55.75 प्रतिशत महिलाऐं हैं। वहीं क्रमशः थलीसैण (10.43 प्रतिशत), बीरोंखाल (7.12 प्रतिशत), यमकेश्वर (6.77 प्रतिशत) द्वारीखाल (6.63 प्रतिशत), पाबों (6.03 प्रतिशत), नैनीडाडा (5.73 प्रतिशत) रिखड़ीखाल (5.19 प्रतिशत), कल्जीखाल (5.10 प्रतिशत), पौड़ी(5.00 प्रतिशत), एकेश्वर (4.88 प्रतिशत), खिर्सू (4.65 प्रतिशत), जयहरीखाल (4.65 प्रतिशत) व कोट (4.13 प्रतिशत) प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या वितरण वाले विकासखण्ड हैं।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि दुग्ड्डा विकासखण्ड में ग्रामीण जनसंख्या अधिक होने का मुख्य कारण यह है कि यह विकासखण्ड मैदानी क्षेत्र बिजौनर व हरिद्वार जिलें से लगा हुआ है तथा कोटद्वार व दुग्ड्डा नगर क्षेत्र भी इसी विकासखण्ड से जुड़े हैं जिस कारण यहाँ अन्य विकासखण्डों से लोग प्रवास कर कोटद्वार व दुग्ड्डा नगर के ग्रामीण क्षेत्रों में आकर अप्रवास करते है जिस कारण यहाँ ग्रामीण जनसंख्या अधिक है। वहीं पोखड़ा विकासखण्ड पूर्णरूप से पर्वतीय क्षेत्र में बसा है जहाँ रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा की अल्प उपलब्धता के कारण लोग मैदानी नगरीय क्षेत्रों को प्रवास करते हैं जिस कारण यहां सबसे कम ग्रामीण जनसंख्या है। यही कारण अन्य विकासखण्डों में भी लागू होता है।

जनसंख्या घनत्व

जनपद पौड़ी गढ़वाल के जनघनत्व को विकासखण्डवार तालिका 1 द्वारा स्पष्ट किया गया है कि उपरोक्त तालिका के अनुसार जनपद पौड़ी गढ़वाल का कुल ग्रामीण क्षेत्रफल 5156.84 वर्ग किमी है। जनपद पौड़ी गढ़वाल के ग्रामीण जनसंख्या घनत्व को विकासखण्डवार निम्नवत स्पष्ट किया गया है:

100 से कम (न्यून जनसंख्या घनत्व): वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद पौड़ी गढ़वाल में 4 विकासखण्ड नैनीडाडा, रिखड़ीखाल, जयहरीखाल, यमकेश्वर हैं जिनमें 100 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी से कम जनसंख्या घनत्व है।

100 से 150 के मध्य (मध्यम जनसंख्या घनत्व): जनपद पौड़ी गढ़वाल में वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 9 विकासखण्डों में 100 से 150 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी ग्रामीण जनसंख्या घनत्व है, जिसमें थलीसैण, दुग्डा, खिर्सू, द्वारीखाल, कोट, एकेश्वर, कल्जीखाल, पोखड़ा व पाबों विकासखण्ड हैं।

150 से अधिक (उच्च जनसंख्या घनत्व): जनपद पौड़ी गढ़वाल में वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 2 पौड़ी व बीरोखाल विकासखण्डों में 150 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी से अधिक ग्रामीण जनसंख्या घनत्व है।

उपरोक्त तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि पौड़ी गढ़वाल जनपद पर्वतीय क्षेत्र में स्थित है। पर्वतीय क्षेत्र में स्थित होने के कारण इस जनपद के विकासखण्डों का क्षेत्र विस्तार अधिक होता है। लेकिन बसासतों के अनुकूल दशाएँ कम स्थानों पर ही मिलती हैं इसलिए जनसंख्या घनत्व भी कम होता है। जनसंख्या वितरण तथा घनत्व में भौतिक बनावट एवं जलवायु का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस कारण से पौड़ी गढ़वाल जिले के जिन विकासखण्डों में अधिक जनसंख्या घनत्व है वहाँ प्रशासनिक कार्यालय, शिक्षण संस्थान, नगरीयकृत एवं कस्बे हैं तथा जिन विकासखण्डों में कम जनघनत्व है वहाँ ये संस्थान नहीं हैं। जनपद पौड़ी गढ़वाल के ग्रामीण क्षेत्र में बाह्य प्रवास भी अधिक होने के कारण जनसंख्या में कमी है।

लिंगानुपात एवं साक्षरता

समाज में लिंग का अर्थ स्त्री–पुरुषों की संख्या का सामाजिक एवं आर्थिक सम्बन्धों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। किसी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था एवं प्रादेशिक विश्लेषण के लिए लिंगानुपात अत्यन्त लाभदायक यन्त्र है। लिंगानुपात का प्रभाव अन्य जनसांख्यिकीय तत्वों जैसे जनसंख्या वृद्धि, विवाह दर, व्यावसायिक संरचना इत्यादि पर व्यापकता से पड़ता है, साथ ही जनसंख्या प्रवास के स्वभाव एवं प्रचलन की जानकारी भी लिंगानुपात से ज्ञात होता है। वहीं साक्षरता भी समाज में सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास एवं उन्नति का महत्वपूर्ण सूचकांक हैं। किसी क्षेत्र में साक्षरता महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं जिस किसी राष्ट्र की लिंगानुपात उच्च व साक्षरता दर उच्च होती है वहाँ विकास की गति भी उच्च होती है।

तालिका 2: जनपद पौड़ी गढ़वाल में विकासखण्डवार ग्रामीण जनसंख्या का लिंगानुपात व साक्षरता– 2011

क्र0 सं0	विकासखण्ड	लिंगानुपात	साक्षरता प्रतिशत		
			व्यक्ति	पुरुष	महिला
1.	बीरोंखाल	1261	77.22	91.04	66.72
2.	थलीसैण	1179	72.35	88.24	59.44
3.	नैनीडाडा	1213	77.14	91.12	66.00
4.	दुग्ड्डा	1040	86.72	94.01	79.88
5.	रिखड़ीखाल	1186	76.30	90.27	64.81
6.	जयहरीखाल	1143	80.31	91.97	70.43
7.	यमकेश्वर	1085	81.30	92.96	70.85
8.	खिर्सू	1041	87.49	94.94	80.48
9.	द्वारीखाल	1115	81.13	92.86	71.17
10.	पौड़ी	1129	81.50	93.43	71.28
11.	कोट	1113	77.28	92.04	64.31

12.	एकेश्वर	1187	81.25	94.23	70.68
13.	कल्जीखाल	1210	79.67	93.02	69.00
14.	पोखड़ा	1260	78.11	93.22	66.56
15.	पाबों	1240	78.17	92.58	67.16
जनपद में कुल		1144	80.38	92.43	70.18

(स्रोतः जिला जनगणना पुस्तिका–2011)

उपरोक्त तालिका–2 के अनुसार पौड़ी गढ़वाल जनपद के ग्रामीण जनसंख्या में 1100 से कम लिंगानुपात वाले 03 विकासखण्ड दुग्डा, यमकेश्वर व खिर्सू हैं। ये विकासखण्ड नगरीयकृत व शिक्षण संस्थान होने के कारण ग्रामीण महिलाऐं नगरों में बच्चों की शिक्षा के लिए गाँवों से पलायन कर चुके हैं, जिस कारण ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की कमी के कारण लिंगानुपात कम है। वहीं 1101 से 1200 लिंगानुपात वाले 07 विकासखण्ड थलीसैण, रिखड़ीखाल, जयहरीखाल, द्वारीखाल, पौड़ी, कोट व एकेश्वर हैं, इन विकासखण्डों में पुरुषों का रोजगार हेतु विभिन्न शहरों में पलायन करने से इन विकासखण्डों में अधिक लिंगानुपात है। जबकि 1201 से अधिक लिंगानुपात वाले 05 विकासखण्ड बीरोखाल, नैनीडाडा, कल्जीखाल, पोखड़ा व पाबों हैं, इन विकासखण्डों से पुरुषों का बाह्य प्रवास अधिक है जिस कारण गाँवों में महिलाओं की संख्या अधिक होने के कारण लिंगानुपात अधिक है। जबकि पौड़ी जनपद के कुल ग्रामीण जनसंख्या का 1144 लिंगानुपात है।

साक्षरता

तालिका–2 के अनुसार वर्ष 2011 की जनगणना में पौड़ी गढ़वाल जनपद के ग्रामीण जनसंख्या मे सबसे सर्वाधिक साक्षरता खिर्सू विकासखण्ड में 87.49 प्रतिशत है जो जनपद की कल साक्षरता 80.38 प्रतिशत से भी अधिक है। वहीं सबसे कम साक्षरता नैनीडाडा विकासखण्ड की 77.14 प्रतिशत है। जनपद पौड़ी गढ़वाल में 80 प्रतिशत से कम कुल साक्षरता वाले 08 विकासखण्ड है जिसमें बीरोंखाल, थलीसैण, नैनीडाडा, रिखड़ीखाल, कोट, कल्जीखाल, पोखड़ा व पाबों हैं जबकि शेष विकासखण्डों में 80 से 90 प्रतिशत लोग साक्षर हैं। वहीं पुरुष साक्षरता में सर्वाधिक खिर्सू विकासखण्ड में 94.94 प्रतिशत पुरूष साक्षर हैं, तो सबसे कम थलीसैंण विकासखण्ड में 59.44 प्रतिशत पुरुष साक्षर हैं। शेष सभी विकासखण्डों में 90 से 95 प्रतिशत तक पुरुष साक्षर हैं, जबकि महिला साक्षरता में सबसे अधिक खिर्सू विकासखण्ड में 80.48 प्रतिशत महिलाऐं साक्षर हैं। सबसे कम थलीसैंण विकासखण्ड में 59.44 प्रतिशत महिलाऐं साक्षर हैं। जनपद पौड़ी गढ़वाल में ग्रामीण साक्षरता में 60 से 70 प्रतिशत महिला साक्षरता वाले 07 विकासखण्ड बीरोंखाल, नैनीडाडा, रिखड़ीखाल, कोट, कल्जीखाल, पोखड़ा व पाबों हैं। शेष विकासखण्डों में 70 से 80 प्रतिशत महिलाऐं साक्षर हैं।

तालिका–2 के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि जनपद पौड़ी गढ़वाल के ग्रामीण साक्षरता में उन विकासखण्डों में साक्षरता अधिक है जहाँ शिक्षण संस्थान, नगरीकृति क्षेत्र संरचनात्मक सुविधाऐं उपलब्ध हैं तथा जिन विकासखण्डों में कम साक्षरता है वहाँ उचित शिक्षण संस्थान की सुविधा उपलब्धता कम है तथा रोजगार हेतु बाह्य प्रवास अधिक है। वहीं पुरुष साक्षरता की तुलना में महिलाओं की साक्षरता बहुत–कम है। इसका मुख्य कारण महिलाऐं घरेलू कार्यों में संलग्न रहते हैं जिस कारण से वे शिक्षा से वंचित रहते हैं तथा महिलाओं की साक्षरता को पुरुषों की अपेक्षा कम महत्व दिया जा रहा है।

जनपद पौड़ी गढ़वाल में जनसंख्या वद्धि एवं ह्रास

जनसंख्या भूगोल का मूल तथ्य मनुष्य निवासित भू–भाग में प्रादेशिक विषमताओं को समझने में निहित है, ट्रिवार्थी का यह विचार जनसंख्या भूगोल के मूल सारांश के रूप में माना जाता है। जनसंख्या मानवों मात्र की संख्या नहीं है अपितु इसमें मानव की सांस्कृतिक विशेषताएँ संग्रहित हैं, जिन्हें हम जनसंख्या विशेषता कहते हैं। इसमें जनसंख्या वितरण, जनसंख्या वृद्धि, घनत्व, साक्षरता, आयु संरचना, लिंगानुपात आदि तथ्यों की प्राप्ति होती है जो किसी क्षेत्र विशेष की जनसंख्या की विशेताओं को प्रकट करती है। किसी क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि कई अन्य कारकों से भी प्रभावित होती है। किसी क्षेत्र में एक निश्चित अवधि के भीतर हुई जनसंख्या की कमी जनसंख्या ह्रास के

माध्यम से व्यक्त होती है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में जनपद पौड़ी गढ़वाल की जनसंख्या वृद्धि एवं ह्रास में विकासखण्डवार अध्ययन किया गया है। जनगणना विभाग द्वारा समय–समय पर प्रकाशित आंकड़ों को आधार बनाया गया है। विगत वर्षों में नयी–नयी तहसीलें खुलने के कारण तहसीलों की संख्या घट–बढ़ गयी है परन्तु विकासखण्डों के संख्या यथावत बनी है।

जनपद पौड़ी गढ़वाल में दशकीय जनसंख्या वद्धि

जनपद पौड़ी गढ़वाल के जनसंख्या वृद्धि एवं ह्रास को समझने के लिए 1901 से 2011 के दशकों की कुल जनसंख्या का प्रतिशत ज्ञात किया गया है। जनपद पौड़ी गढ़वाल में विभिन्न दशकों में निम्नवत जनसंख्या वृद्धि एवं ह्रास हुआ है:

तालिका 3: जनपद पौड़ी गढ़वाल में जनसंख्या का दशकीय वृद्धि प्रतिशत में (1901–2011)

जनगणना दशक वर्ष	1901–1911	1911–1921	1921–1931	1931–1941	1941–1951	1951–1961	1961–1971	1971–1981	1981–1991	1991–2001	2001–2011
जनसंख्या प्रतिशत में	11.7	1.2	10.0	12.8	6.2	14.0	14.5	15.5	8.60	3.9	–1.4

(स्रोत– भारत की जनगणना– 1901–2011)

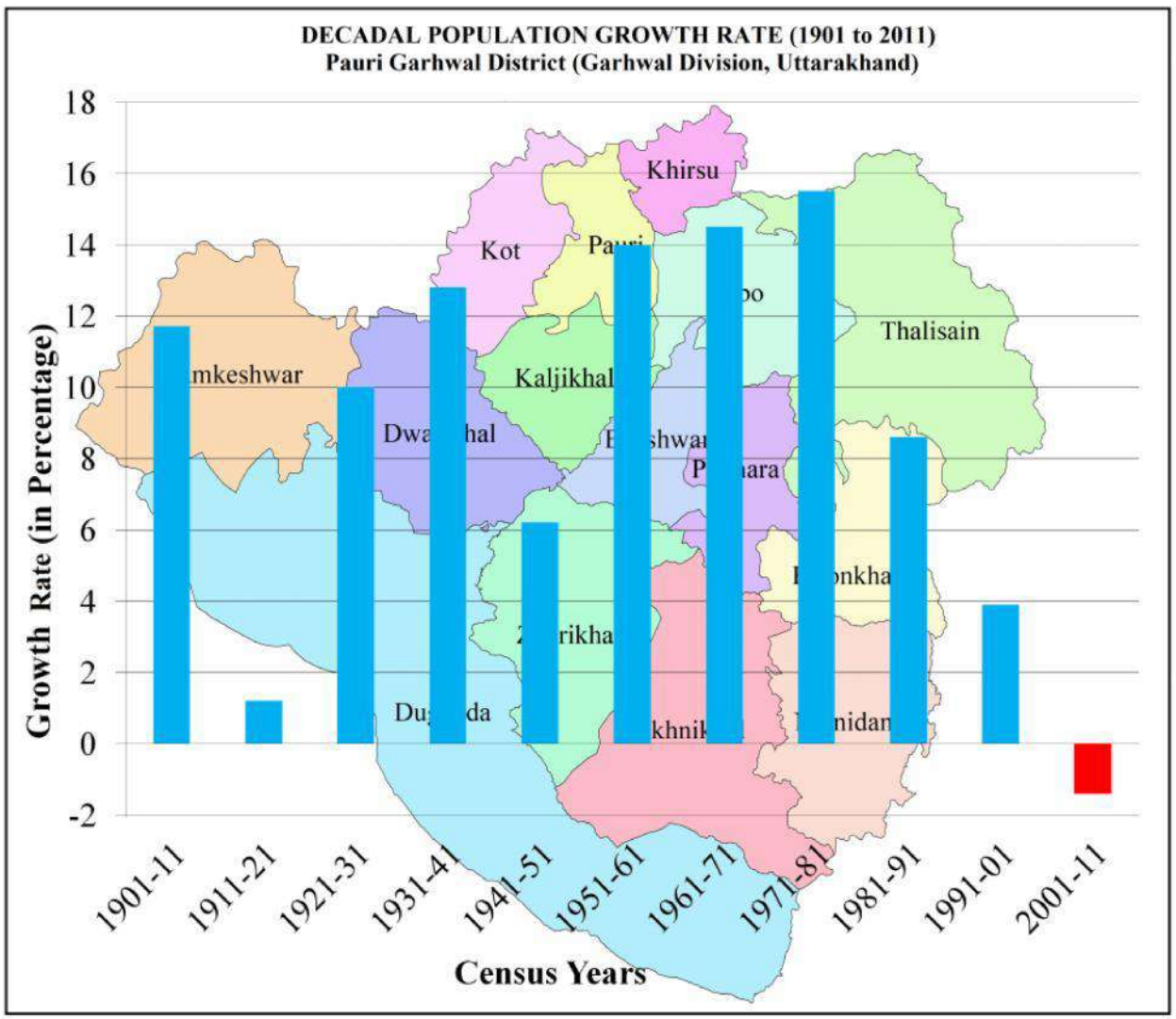

मानचित्र 2: जनपद पौड़ी गढ़वाल में जनसंख्या का दशकीय वृद्धि दर।

तालिका–3 एवं मानचित्र–2 से स्पष्ट होता है कि सन् 1901 से 1911 के दशक में जनपद पौड़ी गढ़वाल की जनसंख्या वृद्धि दर 11.7 प्रतिशत रही है। यह दशक उच्च जन्मदर एव उच्च मृत्युदर तथा स्वास्थ्य सेवाओं के अभाव का समय था, इसलिए इस दशक में जनसंख्या वृद्धि सामान्य रही हैं। जबकि सन् 1911 से 1921 के मध्य सम्पूर्ण भारतीय जनगणना काल महत्वपूर्ण रहा। इस दौरान सम्पूर्ण देश में अनेक संक्रमित रोगों के फैलने के कारण जनसंख्या में ह्रास अंकित किया गया जिस कारण जनपद पौड़ी गढ़वाल में इन दशक में 1.2 प्रतिशत जनसंख्या वृद्धिदर दर्ज की गई जो पूर्व के दशक से 10.5 प्रतिशत कम थीं। इसका प्रमुख कारण भी संक्रमित रोगों का प्रभाव एवं स्वास्थ्य सेवाओं तक आम जन की पहुँच नहीं हो पाना रहा। सन् 1921 से 1931 के दशक में जनपद पौड़ी गढ़वाल की जनसंख्या में 10.0 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई, जो सन् 1921 की तुलना में 9.8 प्रतिशत की सकारात्मक वृद्धि हुई। सन् 1931 से 1941 के दशक में पौड़ी जनपद में 12.3 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई जो पूर्व के दशक से 2.8 प्रतिशत अधिक है। वर्ष 1951 की जनगणना स्वतंत्र भारत की प्रथम जनगणना थी। इस दौर जनपद पौड़ी की जनसंख्या वृद्धि 6.2 प्रतिशत रही तथा इसी दौरान भी जनसंख्या वृद्धि दर में अप्रत्याशित रूप में 6.6 प्रतिशत का ह्रास दर्ज की गई। सन् 1961 में जनपद पौड़ी गढ़वाल में जनसंख्या में सकारात्मक वृद्धि होने लगी थी क्योंकि स्वतंत्र भारत के बाद स्वास्थ्य सुविधाओं का प्रत्यक्ष प्रभाव बढ़ने से 1951 से 1961 के दशक में जनपद पौड़ी में 14.0 प्रतिशत जनसंख्या वृद्धि दर्ज की गई जो पूर्व के दशक से 7.8 प्रतिशत की सकारात्मक वृद्धि हुई। इसी प्रकार 1961 से 1971 के दशक में 14.5 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई, जो पूर्व की दशक से 0.5 प्रतिशत सकारात्मक वृद्धि हुई। सन् 1971 से 1981 के दशक में जनपद पौड़ी गढ़वाल में 15.5 प्रतिशत जनसंख्या वृद्धि दर्ज की गई जो पूर्व के दशक से 01 प्रतिशत की सकारात्मक वृद्धि हुई। सन् 1981 के बाद बढ़ती जनसंख्या, शिक्षा सुविधाओं का प्रचार–प्रसार एवं परिवहन संसाधनों का विस्तार, रोजगार के लिए कार्यशील जनसंख्या का ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों को वाह्य प्रवास के कारण सन् 1981 से 1991 की दशक में जनपद पौड़ी गढ़वाल की 8.6 प्रतिशत जनसंख्या वृद्धि दर्ज की गई जो पूर्व के दशक से 6.9 प्रतिशत नकारात्मक वृद्धि अंकित की गई। इसी प्रकार जनपद पौड़ी गढ़वाल में 1981 के बाद धीरे–धीरे जनसंख्या में ह्रास होना प्रारम्भ हो गया, जिसका मुख्य कारण जनसंख्या का विभिन्न शहरों को बाह्य प्रवास करना है जिस कारण सन् 1991 से 2001 के दशक में जनपद पौड़ी गढ़वाल की जनसंख्या में 3.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई जो पूर्व के दशक से 4.7 प्रतिशत की नकारात्मक वृद्धि अंकित की गई। 9 नवम्बर 2000 को उत्तराखण्ड राज्य का गठन हुआ। राज्य के गठन के बाद उत्तराखण्ड में अनेक औद्योगिक संस्थान व यातायात, शिक्षण संस्थानों की सुविधा तीव्र होने से वर्ष 2001 से 2011 के दशक में जनपद पौड़ी गढ़वाल की जनसंख्या में तीव्र ह्रास के कारण –1.41 प्रतिशत नकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई। यह नकारात्मक वृद्धि प्रथम बार उत्तराखण्ड राज्य में अंकित की गई जो एक चिंतनीय विषय है।

जनपद पौड़ी गढ़वाल में विकासखण्डवार जनसंख्या वद्धि

जनपद पौड़ी गढ़वाल में वर्ष 1981 से 2001 के मध्य कुल जनसंख्या वृद्धि दर सापेक्षित रूप से पूर्व जनगणानाओं की तुलना में कम थी लेकिन वर्ष 2001 से 2011 के मध्य जिला स्तर पर जनपद पौड़ी गढ़वाल की ऋणात्मक जनसंख्या वृद्धि का परिदृश्य उभरकर सम्मुख आया है, जिसे देखते हुए जनपद पौड़ी गढ़वाल की ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि का विकासखण्डवार वृद्धि एवं ह्रास का वितरण निम्नवत है:

तालिका 4: जनपद पौड़ी गढ़वाल में विकासखण्डवार ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि दर (1991–2011)

क्र0 सं0	विकासखण्ड	जनगणना वर्ष			क्र0 सं0	विकासखण्ड	जनगणना वर्ष		
		1981–91	1991–01	2001–11			1981–91	1991–01	2001–11
1.	बीरोंखाल	-3.18	-4.43	-11.49	9.	द्वारीखाल	34.54	-4.77	-9.45
2.	थलीसैण	16.57	11.85	5.26	10.	पौड़ी	1.59	-2.87	-5.92
3.	नैनीडाडा	7.07	-3.09	-9.95	11.	कोट	-2.58	-11.05	-7.13
4.	दुग्ड्डा	4.12	31.71	6.97	12.	एकेश्वर	-1.94	-4.05	-14.18
5.	रिखड़ीखाल	4.22	-3.58	-11.40	13.	कल्जीखाल	0.97	-5.85	-12.59
6.	जयहरीखाल	-9.61	-4.91	-15.67	14.	पोखड़ा	8.42	-5.85	-14.51

7.	यमकेश्वर	18.7	7.41	-12.23	15.	पाबों	5.6	-1.24	-7.09
8.	खिर्सू	14.07	16.58	11.45	जनपद में कुल		5.98	2.97	-5.38

(स्रोत– जिला जनगणना पुस्तिका– 1991–2011)

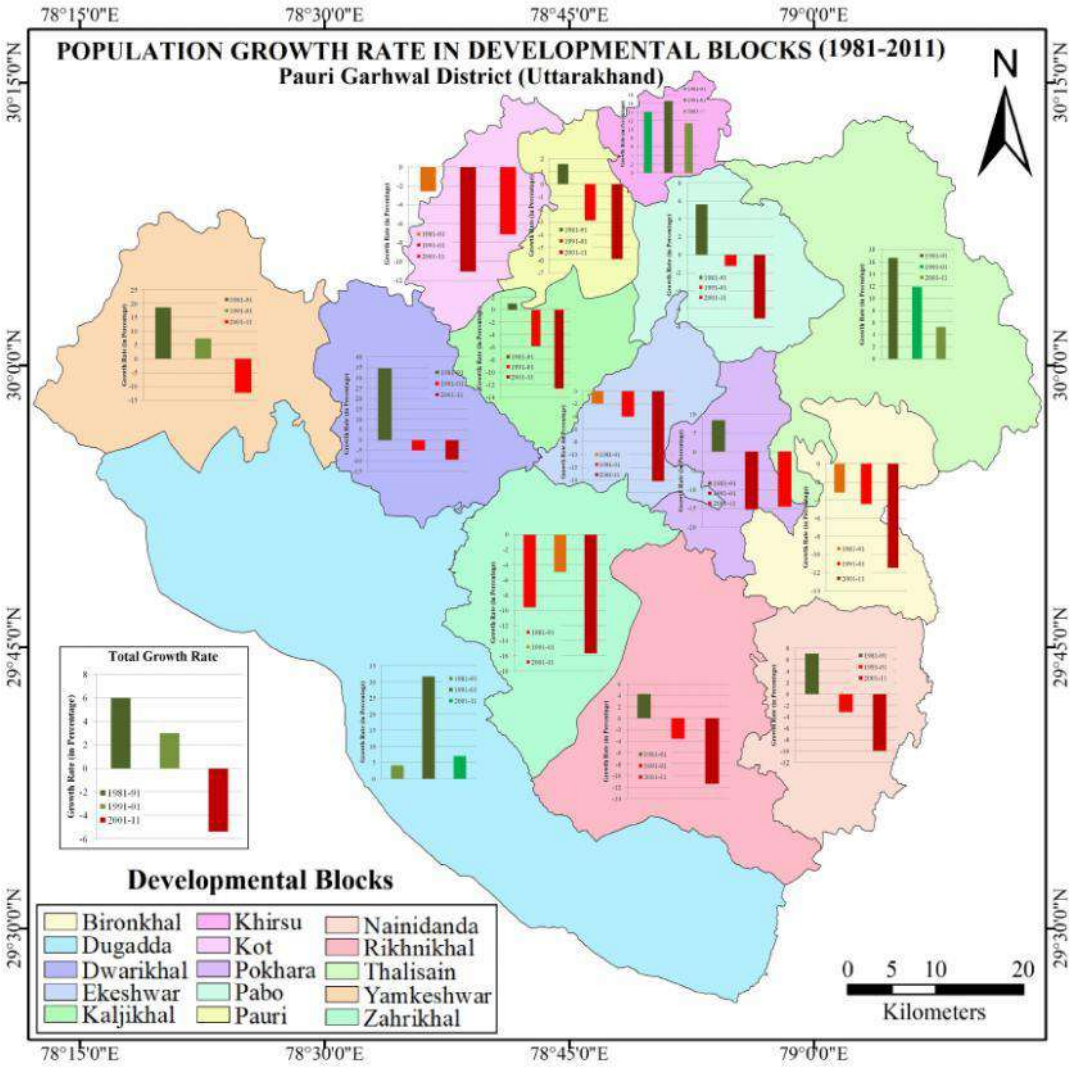

मानचित्र 3: जनपद पौड़ी गढ़वाल में विकासखण्डवार ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि दर (1991–2011)

तालिका–4 एवं मानचित्र–3 के अनुसार जनपद पौड़ी गढ़वाल की ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि को विकासखण्डवार सकारात्मक व नकारात्मक वृद्धि का अध्ययन पृथक–पृथक तौर पर किया गया है।

सकारात्मक वृद्धि

जनपद पौड़ी गढ़वाल की ग्रामीण जनसंख्या में सन् 1981–1991 के दशक में 11 विकासखण्ड ऐसे हैं जिनमें पूर्व के दशक से सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई जिसमें थलीसैण 16.57, नैनीडाडा 7.07, दुग्ड्डा 4.12, रिखड़ीखाल 4. 22, यमकेश्वर 18.7, खिर्सू 14.07, द्वारीखाल 34.54, पौड़ी 1.59, कल्जीखाल 0.97, पाखेड़ा 8.42, पाबों 5.6 प्रतिशत सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई है, वहीं जनपद की कुल ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि 5.98 प्रतिशत थी। जबकि सन् 1991–2001 के दशक में इनकी संख्या घटकर 04 हो गयी जिसमें थलीसैंण 11.85 प्रतिशत, दुग्ड्डा 31.71 प्रतिशत, यमकेश्वर 7.41 प्रतिशत व खिर्सू 16.58 प्रतिशत सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई। दुग्ड्डा व खिर्सू विकासखण्डों में पूर्व के दशक से वृद्धि हुई है लेकिन थलीसैंण व यमकेश्वर में जनसंख्या वृद्धि दर घटी है। जबकि सन् 2001–2011 के दशक में सकारात्मक विकासखण्डों की संख्या घटकर 03 रह गई है, जिसमें थलीसैंण 5.26 प्रतिशत दुग्ड्डा 6.97 प्रतिशत, खिर्सू 11.45 प्रतिशत की सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई इन विकासखण्डों में पूर्व के दशक से वृद्धि में कमी

आयी है। जनपद पौड़ी गढ़वाल के ग्रामीण जनसंख्या में सकारात्मक वृद्धि दर्ज करने वाले विकासखण्डों में 3 दशकों में भारी परिवर्तन देखने को मिला है जहाँ 1981–1991 के दशक में 11 विकासखण्ड सकारात्मक थे जो 2011 की जनगणना में केवल 03 ही विकासखण्ड सकरात्मक है। इसका मुख्य कारण सन् 1981 के बाद बढ़ती जनसंख्या, शिक्षा सुविधाओं का प्रचार–प्रसार, संचार सुविधाओं का विकास, रोजगार हेतु कार्यशील जनसंख्या का ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों को पलायन, स्वास्थ्य सुविधाओं का विकास होने के कारण जनपद पौड़ी गढ़वाल के ग्रामीण जनसंख्या में कमी आने के कारण इन विकासखण्डों में यह परिवर्तन देखा गया है। वर्ष 2011 की जनगणना में जो विकासखण्ड सकारात्मक वृद्धि वाले है उन विकासखण्डों में नगरीयकृत क्षेत्र, प्रशासनिक इकाईयाँ व शैक्षणिक संस्थाओं का जमाव होने के कारण इन नगरों के ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या का जमाव अधिक है।

नकारात्मक वद्धि

जनपद पौड़ी गढ़वाल के ग्रामीण जनसंख्या सन् 1981–1991 के दशक में 04 विकासखण्डों में पूर्व के दशक से नकारात्मक जनसंख्या वृद्धि दर्ज की गई जिसमें बीरोंखाल, जहरीखाल, कोट व एकेश्वर में क्रमशः –3.18, –9.61, –2.28 व –1.94 प्रतिशत नकारात्मक वृद्धि अंकित की गई है। जबकि सन् 1991–2001 के दशक में इन विकासखण्डों की संख्या में वृद्धि हुई जो 11 विकासखण्ड बीरोंखाल, नैनीडाडा, रिखड़ीखाल, जयहरीखाल, द्वारीखाल, पौड़ी, कोट, एकेश्वर, कल्जीखाल, पोखड़ा व पाबों में क्रमशः –4.43, –3.09, '3.58, –4.91, –4.77, –2.87, –11.05, 4.05, –5.85, –5.85, –1.24 प्रतिशत की नकारात्मक वृद्धि दर्ज की गयी है। जहरीखाल विकासखण्ड में पूर्व के दशक से इस दशक में नकारात्मक वृद्धि दर में कमी आयी है लेकिन शेष सभी नकारात्मक जनसंख्या वृद्धि वाले विकासखण्डों में वृद्धि हुई है। जबकि सन् 2001–2011 के दशक में 12 विकासखण्डों में नकारात्मक जनसंख्या वृद्धि दर्ज की है जिसमें बीरोखाल, नैनीडाडा, रिखडीखाल, जयहरीखाल, यमकेश्वर, द्वारीखाल, पौड़ी, कोट, एकेश्वर, कल्जीखाल, पोखड़ा व पाबों में क्रमशः –11.49, –9.95, –11.40, –15.67, –12.23, –9.45, –5.92, –7.13, –14.18, –12.59, –14.51 व –7.09 प्रतिशत नकारात्मक जनसंख्या वृद्धि हुई, वहीं जनपद पौड़ी की कुल ग्रामीण जनसंख्या में इसी दशक में –5.38 प्रतिशत नकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई है। इन विकासखण्डों में यमकेश्वर व पौड़ी में नगरीकृत क्षेत्र है जहाँ की ग्रामीण जनसंख्या का कुछ हिस्सा नगरीय क्षेत्रों में स्थानान्तरण हो गया होगा, लेकिन शेष सभी नकारात्मक जनसंख्या वृद्धि वाले विकासखण्डों में सम्पूर्ण जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है तथा कृषि ही इनका जीवन का मुख्य आधार है। वर्तमान में कृषि उत्पादकता में कमी एवं मौसमी असमानताओं वर्षा में कमी तथा जंगली जानवरों द्वारा कृषि फसलों को नुकसान पहुँचाने के कारण कृषकों का कृषि कार्यों से विलगाँव हुआ है तथा वे आजीविका के अन्य स्रोतों में अधिकांश विभिन्न नगरीय क्षेत्रों में प्रवास कर गये हैं। नगरीय क्षेत्रों में अधिकांश कार्यशील युवावर्ग की जनसंख्या का सपरिवार प्रवास होने के कारण निम्न जन्मदर होना भी सम्भवतया इन विकासखण्डों में ग्रामीण जनसंख्या ह्रास का एक प्रमुख कारण हो सकता है।

जनपद पौड़ी गढ़वाल में जनसंख्या ह्रास के कारण एवं परिदृश्य

सामान्यतः जनसंख्या ह्रास के मुख्य प्राकृतिक कारक महामारी, अकाल, कुपोषण, अकाल मृत्यु, प्राकृतिक आपदायें इत्यादि मानी जाती है, लेकिन जनसंख्या व्यवहार में आने वाले परिवर्तन में जनसंख्या में गिरावट प्रस्तुत करते हैं। जनसंख्या का बाह्य प्रवास, निम्न जन्मदर, विवाह की बढ़ती उम्र एवं पारिवारिक जीवन पद्धति के प्रति टूटता लगाव अन्य ऐसे कारण है जिनसे जनसंख्या में गिरावट आई है। जनपद पौड़ी गढ़वाल के विशेष सन्दर्भ में पारिवारिक समाज से विमुक्त होकर आर्थिक बदलावों की चाह में बढ़ता पलायन यहाँ की जनसंख्या ह्रास का प्रमुख कारण है। उक्त सन्दर्भ में प्रस्तुत इस शोध प्रपत्र में प्रमुख कारणों पर प्रकाश डाला गया है।

1. **बाह्य प्रवासः** मनुष्य विभिन्न कारणों से एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास करता है क्योंकि मनुष्य एक गतिशील प्राणी है। जनसंख्या का किसी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर बसने को प्रवास कहते हैं। अतः जनपद पौड़ी गढ़वाल में भी जनसंख्या ह्रास के पीछे जनसंख्या का बाह्य प्रवास हो सकता है। उत्तराखण्ड के बाह्य प्रवास पर किये गये सभी अध्ययन इस प्रवृति की पुष्टि करता है। (चन्द आर., तड़ागी,

आर. सी. एस. (1996), तड़ागी आर. सी. एस., चन्द्र आर (2014)

2. **आर्थिक कारणः** आर्थिक कारण प्राचीन काल से लोगों के प्रवास का मुख्य कारण रहा है। जनपद पौड़ी गढ़वाल में अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है जो प्राथमिक कार्यों में संलग्न रहते हैं जिसमें कृषि पशुपालन मुख्य रूप से सम्मिलित है। लेकिन इन कार्यों से इतनी आय नहीं हो पाती है कि जिससे लोग अपनी आजीविका चला सके। यह आजीविका सतत् भी नहीं है। जनपद पौड़ी गढ़वाल के ग्रामीण जनसंख्या आजीविका हेतु विभिन्न नगरों को प्रवास कर रहे होंगे, जिस कारण जनसंख्या में नकारात्मक वृद्धि दर्ज की जा रही है।

3. **असफल भू–उपयोगः** जो खेती करने योग्य भूमि होती है उसका निरन्तर एवं पारम्परिक रूप से उपयोग किये जाने से उस भूमि से उत्पादन की मात्रा काफी कम हो जाती है तथा वह परिवार के जीवन निर्वाह के लिए अपर्याप्त है। इस हेतु भूमि उपयोग में तथा फसलों के चयन में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। जनपद पौड़ी गढ़वाल के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि उत्पादन में कमी, मौसमी मार एवं जंगली जानवरों द्वारा कृषि को नुकसान से ग्रामीण लोगों को बाह्य प्रवास करने पर मजबूर कर रहा है, जिस कारण ग्रामीण क्षेत्रों से जनसंख्या ह्रास तीव्र गति से बढ़ रहा है।

4. **बेरोजगारीः** प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन की मूलभूत आवश्यकता हेतु धन की आवश्यकता होती है। किसी रोजगार या आर्थिक क्रिया के अनुरूप रोजगार की पर्याप्त अवसर उपलब्ध नहीं होते हैं। बेरोजगारी की समस्या बाह्य प्रवास के लिए एक प्रमुख कारण है। जनपद पौड़ी गढ़वाल के 15 विकासखण्डों में से 09 विकासखण्ड पूर्ण रूप से ग्रामीण क्षेत्र में है, जिस कारण इन ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के कोई साधन नहीं हैं इसलिए यहाँ की ग्रामीण जनसंख्या रोजगार हेतु बाह्य प्रवास कर रही है।

5. **शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का अभावः** शिक्षा का स्तर एवं शैक्षणिक संस्थानों की उपलब्धता एवं गुणवत्ता किसी क्षेत्र में मानव विकास एवं आर्थिक विकास की आधारशील होती है। लेकिन जनपद पौड़ी गढ़वाल क्षेत्र में तथा ग्रामीण क्षेत्र में इस प्रकार के शिक्षा संस्थाओं का पर्याप्त अभाव है जो वहाँ के लोगों को इस प्रकार शिक्षित कर सके कि वे स्थानीय संसाधनों पर आधारित स्वरोजगार के अवसर निर्मित कर सकें। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का जो स्वरूप चल रहा है उसका एकमात्र लक्ष्य केवल साक्षर बनाना है तथा यह शिक्षा परिस्थितियों के अनुरूप व्यवहारिक नहीं है, जिससे वह व्यक्ति को केवल साक्षर बना रही, न कि जीवन के लिए उपयोगी। इसी के परिणाम स्वरूप आज कुछ युवा ग्रामीण क्षेत्र में उचित शिक्षा के अभाव में जनपद पौड़ी गढ़वाल के ग्रामीण क्षेत्रों से बाह्य प्रवास कर रहे है।

   स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव भी जनसंख्या ह्रास का एक प्रमुख कारण है। ग्रामीण क्षेत्रों में एकमात्र सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र व प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित हैं। लेकिन संसाधनों के अभाव में ये लोगों को पर्याप्त सुविधा प्रदान करने में असमर्थ है इसलिए भी अधिकांश लोग महानगरों की ओर रूख कर रहे हैं। यह जनसंख्या के ह्रास को प्रोत्साहन देने का एक अहम् कारण हैं।

6. **अन्य कारणः** इसकें अतिरिक्त संचार साधनो का अभाव, लघु उद्योग–धन्धों का अभाव, आधुनिक सुख–सुविधाओं की उपलब्धता का कम होना, ग्रामीण क्षेत्रों की भौगोलिक स्थिति आदि महत्वपूर्ण कारण हैं जिस कारण लोग ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों को बाह्य प्रवास कर रहे है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या ह्रास की स्थिती बन रही है।

निष्कर्ष

हिमालयी राज्य उत्तराखण्ड के पौड़ी गढ़वाल जनपद में ग्रामीण जनसंख्या ह्रास का अध्ययन पर आधारित इस शोध प्रत्र के अध्ययन में यह पाया गया कि जनपद पौड़ी के अधिकांश विकासखण्डों में जनसंख्या ह्रास की स्थितियाँ बनी है। वर्ष 2001 व 2011 के दशक में पौड़ी गढ़वाल जनपद के 15 विकासखण्डों में से 12 विकासखण्डों

में ग्रामीण जनसंख्या का ह्रास हुआ है जिस कारण इन विकासखण्डों की जनसंख्या वृद्धि नकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई है। जनपद पौड़ी गढ़वाल के तीन विकासखण्डों में 2011 व 2011 के मध्य सकारात्मक जनसंख्या वृद्धि अंकित की गई है इसका मुख्य कारण इन विकासखण्डों में नगरीय क्षेत्रों का होना तथा मैदानी क्षेत्रों से नजदीकी होना है।

जनपद पौड़ी गढ़वाल के 15 विकासखण्डों में वर्ष 2001 से 2011 के मध्य देखा जाय तो सबसे अधिक जनसंख्या ह्रास जयहरीखाल में –15.67 प्रतिशत है जबकि सबसे कम –5.26 प्रतिशत के साथ थलीसैंण विकासखण्ड है। वर्तमान में जनसंख्या ह्रास के परिणाम स्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं जनसांख्यिकी परिवर्तन हो रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में निवास कर रहे वर्तमान जनसंख्या में अधिकांश जनसंख्या अधिक आयु वर्ग के व्यक्तियों की है। वास्तविक सन्दर्भ में पड़ताल करने पर यह तथ्य प्रकट होता है कि युवावर्ग की जनसंख्या चूंकि पहाड़ों में निवास कर रही जनसंख्या में कमी हो गयी है जिसका वर्तमान में ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक परम्परागत उद्योग–धन्धों जो कृषि पर आधारित थे समाप्त हो गये है जिससे वर्षों से संजोयी परमपरा का अवनयन हुआ है। उद्योग– धन्धों के स्थान पर नगरीय चकाचौंध एवं आकर्षण के कारण अपने पारम्परिक उद्योग एवं कृषि के स्थान पर नगरों में कम मजदूरी पर भी काम कर रहे है जो क्रियाशील जनसंख्या का बाह्य प्रवास का प्रमुख कारण है।

सन्दर्भ सूची

1. अनाँनिमस्, (1991) प्राथमिक जनगणना सार, जिला जनगणना पुस्तिका भाग (ब), जनगणना भवन, जनगणना कर्यालय निदेशालय प्लाट सी. सी. –1 बाबू रामकुमार श्रीवास्तव मार्ग सेक्टर जी. सेक्टर एल अलिगंज लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
2. अनाँनिमस्, (2001) प्राथमिक जनगणना सार, जिला जनगणना पुस्तिका भाग (ब), जनगणना भवन, जनगणना कर्यालय निदेशालय उत्तराखण्ड भारत सरकार गृह मंत्रालय (देहरादून)
3. अनाँनिमस्, (1991) प्राथमिक जनगणना सार तथा जिला जनगणना पुस्तिका भाग (ब), (डिस्ट्रिक्ट सैन्सस हैण्ड बुक) डब्लू डब्लू डब्लू – सैन्सस ऑफ इण्डिया जीओवीटी।
4. चाँदना, आर. सी. (2017) जनसंख्या भूगोल बी– आई/1292 राजेन्द्र नगर लुधियाना 155–156
5. पन्त, बी. आर., चन्द, आर. एण्ड मेहता, बी. एस. (2022) उत्तराखण्ड जनसंख्याः परिदृश्य एवं परिवर्तन (संपादक) पहाड़ फाउण्डेशन, परिक्रमा, तल्लाडांडा तल्लीताल नैनीताल पृ. सं. 50,73।
6. Chand, R. and Taragi, R.C.S. (1996): Migration from U.P. Himalaya (in Hindi). In Valdiya K.S. (ed.) *Uttarakhand Today,* Shree Almora Book Depot, pp. 171-180.
7. Chand, R., Taragi, R.C.S. and Pant, B.R. (2016): Changing demographical profile and migration in Uttarakhand. In C.S. Negi (ed.) *Uttarakhand Nature, Culture, Biodiversity,* Winsar Publishing Co. Dehradun, pp. 390-403,
8. Goto, S. (1994): On several stages of out-migration and social changes in typical Japanese villages in sparsely populated areas (ed.) Marginal Areas in Developed Countries, Umu Tryckeri, Umea, CERUM Sweden, pp. 153-160.
9. Longstaff, G.B. (1893): Rural depopulation, paper read before the royal statistical society London, June 20, 1893 (print for private circulation) Accessible at (https://archiv.org/detail/b24399012) Accessed on July 28, 2017.
10. Weyl, W.E. (1912): Depopulation in France, the North American Review, 195 (676), pp.343-355 (Stable URL: http//www.jstor.org/stable/25119719) accessed 28-07-2017.

****